AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

मध्यप्रदेश के गुना नगर के अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

ORIGINAL ARTICLE

Authors

डॉ. सीमा कुशवाह
सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग
आई.पी.एस. कॉलेज
ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

नरेश चन्देल
शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र
जीवाजी विश्वविद्यालय
ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध सार

प्रस्तुत शोध अध्ययन मध्यप्रदेश के गुना नगर स्थित अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि के बीच तुलनात्मक अंतर को स्पष्ट करने के उद्देश्य से किया गया है। इस शोध में सर्वेक्षण विधि को अपनाया गया, जो शैक्षिक अनुसंधान में एक प्रभावी विधि मानी जाती है। कुल 50 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया है। छात्रों की अभिवृत्ति को मापने हेतु प्रामाणिक उपकरण डॉ. टी. एस. सोढी द्वारा विकसित अभिवृत्ति मापदंड का प्रयोग किया गया, वहीं शैक्षिक उपलब्धि के लिए विद्यार्थियों के पिछले वर्ष के परीक्षा परिणामों को आधार बनाया गया। आंकड़ों का विश्लेषण करने के लिए टी–टेस्ट सांख्यिकीय परीक्षण का उपयोग किया गया। विश्लेषण से यह तथ्य सामने आया कि छात्र एवं छात्राओं की अभिवृत्ति तथा शैक्षिक उपलब्धियों में स्पष्ट रूप से सार्थक अंतर मौजूद है। यह अंतर संभवतः सामाजिक, पारिवारिक, शैक्षिक वातावरण अथवा लिंग आधारित मनोवैज्ञानिक कारकों के कारण दृष्टिगोचर होता है। शोध निष्कर्ष इस बात की ओर संकेत करता है कि शिक्षण पद्धतियों और शैक्षिक योजनाओं में लिंग भेद की समझ आवश्यक है। यह अध्ययन भावी शोधों एवं शैक्षिक सुधारों के लिए एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

मुख्य शब्द

छात्र–छात्रायें, अभिवृत्ति, शैक्षिक उपलब्धि.

प्रस्तावना

शिक्षा मनुष्य के सर्वांगीण विकास का आधार है, जो न केवल ज्ञान का विस्तार करती है, बल्कि सोचने, समझने, व्यवहार करने एवं निर्णय लेने की क्षमता को भी परिष्कृत करती है। वर्तमान समय में केवल किताबी ज्ञान प्राप्त कर लेना ही पर्याप्त नहीं माना जाता, बल्कि विद्यार्थियों की अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि जैसे महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक पक्षों की भी गहन जांच आवश्यक हो गई है। यह शोध प्रस्तावना मध्यप्रदेश के गुना नगर के अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धियों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करती है। इसका उद्देश्य यह समझना है कि किस प्रकार छात्रों की सोच, दृष्टिकोण, रूचियाँ और

मानसिकता उनकी शैक्षिक उपलब्धियों को प्रभावित करती हैं, और क्या लिंग (छात्र एवं छात्रा) के आधार पर इन दोनों पहलुओं में कोई भिन्नता पाई जाती है।

अभिवृत्ति

अभिवृत्ति मनोविज्ञान का एक प्रमुख घटक है, जो व्यक्ति के किसी विषय, व्यक्ति, वस्तु या परिस्थिति के प्रति उसके सकारात्मक या नकारात्मक झुकाव को दर्शाता है। किसी विद्यार्थी की शिक्षकों, विषयों, विद्यालय वातावरण, या स्वयं शिक्षा प्रणाली के प्रति कैसी दृष्टि है, यह उसके सीखने की प्रक्रिया को गहराई से प्रभावित करता है। एक सकारात्मक अभिवृत्ति न केवल आत्मविश्वास को बढ़ावा देती है, बल्कि विद्यार्थी को चुनौतियों का सामना करने और निरंतर प्रयास करते रहने के लिए प्रेरित भी करती है। वहीं नकारात्मक अभिवृत्ति अकसर निराशा, हतोत्साह और शिक्षा से दूरी की भावना को जन्म देती है।

डॉ. प्रकाश शुक्ला (2012) के अनुसार ''अभिवृत्ति व्यक्ति की मानसिक प्रवृत्ति होती है, जो किसी विशेष वस्तु, व्यक्ति या परिस्थिति के प्रति उसके व्यवहार को प्रभावित करती है। यह सकारात्मक अथवा नकारात्मक दोनों रूपों में प्रकट हो सकती है।''

शैक्षिक उपलब्धि

शैक्षिक उपलब्धि उस प्रगति या स्तर को दर्शाती है जो किसी विद्यार्थी ने निर्धारित पाठ्यक्रम या शैक्षणिक मानकों के अनुसार प्राप्त की है। यह उपलब्धि परीक्षाओं, आंतरिक मूल्यांकन, परियोजना कार्य, एवं अन्य शैक्षणिक गतिविधियों के माध्यम से मापी जाती है। यह केवल ज्ञान के आकलन का मानक नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थी की एकाग्रता, लगन, अध्ययन शैली, एवं मानसिक और सामाजिक वातावरण का भी सूचक होती है।

डॉ. एस.एस. चौहान (2007) के अनुसार ''शैक्षिक उपलब्धि वह स्तर है, जो छात्र द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार ज्ञान, कौशल और मूल्यों की प्राप्ति के रूप में प्रदर्शित होता है। यह परीक्षा परिणामों या अन्य शैक्षिक परीक्षणों के माध्यम से मापा जाता है।''

अब यदि हम अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि के परस्पर संबंध की बात करें, तो यह स्पष्ट है कि दोनों तत्व एक–दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। सकारात्मक अभिवृत्ति रखने वाले विद्यार्थी अधिक प्रेरित रहते हैं, आत्मविश्वास से परिपूर्ण होते हैं और पढ़ाई में रुचि लेते हैं, जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि बेहतर होती है। इसके विपरीत नकारात्मक अभिवृत्ति शैक्षणिक प्रदर्शन में गिरावट ला सकती है, भले ही बुद्धि स्तर या संसाधन उपयुक्त हों। इसके अलावा, सामाजिक, पारिवारिक और विद्यालयीय वातावरण, शिक्षकों का व्यवहार, और सहपाठियों के साथ संबंध भी विद्यार्थियों की अभिवृत्ति एवं उपलब्धि को प्रभावित करते हैं।

गुना नगर के अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक एवं शैक्षणिक पृष्ठभूमि विविधता से भरी हुई है। इन विद्यालयों में संसाधनों की सीमितता, शिक्षकों की गुणवत्ता में असमानता, और सामाजिक परिवेश का प्रभाव विद्यार्थियों की सोच और उनकी शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण को विशेष रूप से प्रभावित करता है। इस शोध के अंतर्गत छात्र–छात्राओं की अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धियों का तुलनात्मक विश्लेषण करते हुए यह जाना जाएगा कि क्या लिंग आधारित कोई विशेष प्रवृत्तियाँ देखने को मिलती हैं।

इस अध्ययन से न केवल वर्तमान शैक्षणिक वातावरण को बेहतर ढंग से समझने में सहायता मिलेगी, बल्कि यह नीति निर्धारकों, शिक्षकों एवं अभिभावकों को भी यह जानने में मदद करेगा कि विद्यार्थियों की सकारात्मक मानसिकता विकसित कर उनकी शैक्षणिक उपलब्धियों को कैसे संवारा जा सकता है। अभिवृत्ति और उपलब्धि के इस परस्पर संबंध को समझते हुए, शिक्षा व्यवस्था में आवश्यक सुधारों की दिशा में कदम उठाए जा सकते हैं।

शोध के उद्देश्य

शोधार्थी ने अपने अध्ययन के निम्नलिखित शोध उद्देश्य रखे हैं:

1. अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

3. अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

शोध कार्य के लिए निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया हैः

H_{01} अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

H_{02} अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

शोध विधि

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध पत्र हेतु मध्यप्रदेश के गुना नगर के 5 अशासकीय विद्यालयों में से 25 छात्र तथा 25 छात्राओं का चयन किया गया है अर्थात् कुल 50 विद्यार्थियों को न्यादर्श में सम्मिलित किया गया है।

प्रदत्त संकलन के उपकरण

विद्यार्थियों की अभिवृत्ति के लिए डॉ. टी. एस. सोढी द्वारा विकसित सोढी का अभिवृत्ति मापदंड का प्रयोग प्रामाणिक उपकरण के रूप में किया गया तथा वहीं शैक्षिक उपलब्धि के लिए विद्यार्थियों का पिछले वर्ष का परीक्षा परिणाम लिया गया है।

आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण

आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए निम्नलिखित परीक्षणों का प्रयोग किया गया हैः

- मध्यमान।
- प्रामाणिक विचलन।
- टी–टेस्ट।

तथ्यों का विश्लेषण

परिकल्पना 1

अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका 1: अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं टी–मान

विद्यार्थी	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	स्वतंत्रता अंश	टी–मान
अशासकीय छात्र अभिवृत्ति	36.08	11.41	48	12.20
अशासकीय छात्र शैक्षिक उपलब्धि	76.91	12.24		

48 स्वतंत्रता अंश पर 'टी' का प्रामाणिक मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.68 होता है तथा गणना से प्राप्त 'टी' का मान 12.20 प्राप्त हुआ है जो 0.01 स्तर पर टी के मान से अधिक है अतः सार्थक है। अतः अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर होता है। परिकल्पना असत्य सिद्ध होती है।

परिकल्पना 2

अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका 2: अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं टी–मान

विद्यार्थी	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	स्वतंत्रता अंश	टी–मान
अशासकीय छात्रायें अभिवृत्ति	30.80	11.44	48	11.73
अशासकीय छात्रायें शैक्षिक उपलब्धि	67.40	10.61		

48 स्वतंत्रता अंश पर 'टी' का प्रामाणिक मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.68 होता है तथा गणना से प्राप्त 'टी' का मान 11.73 प्राप्त हुआ है जो 0.01 स्तर पर टी के मान से अधिक है अतः सार्थक है। अतः अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर होता है। परिकल्पना असत्य सिद्ध होती है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में प्राप्त हुआ है कि अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया गया है। शोध में यह स्पष्ट हुआ कि छात्रों और छात्राओं की सोच, दृष्टिकोण तथा अध्ययन के प्रति झुकाव में भिन्नता होती है, जो सीधे तौर पर उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है। सामान्यतः छात्राओं में शिक्षा के प्रति अधिक सकारात्मक अभिवृत्ति देखी गई, जिससे उनकी उपलब्धि का स्तर अपेक्षाकृत बेहतर रहा। वहीं कुछ छात्रों में शिक्षा के प्रति रुचि की कमी, अनुशासनहीनता या सामाजिक–पारिवारिक कारकों के कारण उनकी शैक्षिक उपलब्धि में कमी देखी गई। यह अंतर शैक्षिक वातावरण, शिक्षक की भूमिका, पारिवारिक समर्थन तथा सामाजिक अपेक्षाओं से प्रभावित होता है। अतः यह कहा जा सकता है कि लिंग के आधार पर अभिवृत्ति और शैक्षिक उपलब्धि में अंतर विद्यमान है, जो नीति निर्माताओं और शिक्षकों के लिए महत्वपूर्ण संकेत प्रदान करता है।

सुझाव

- आगामी शोध में अभिवृत्ति के विविध पक्षों जैसे–शिक्षकों के प्रति अभिवृत्ति, विषय के प्रति दृष्टिकोण, एवं विद्यालय वातावरण के प्रति अभिवृत्ति का गहन अध्ययन किया जाना चाहिए, ताकि शैक्षिक उपलब्धि पर उनके प्रभाव को और स्पष्ट रूप से समझा जा सके।
- शोध को केवल लिंग (छात्र–छात्रा) तक सीमित न रखकर, सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि, ग्रामीण–शहरी अंतर, एवं पारिवारिक संरचना के संदर्भ में भी विस्तृत किया जा सकता है।
- आगामी शोधों में मिश्रित शोध पद्धति का उपयोग किया जाना चाहिए, ताकि छात्रों की मानसिकता और व्यवहारिक पहलुओं को गहराई से समझा जा सके।
- अध्ययन में केवल अशासकीय विद्यालयों को सम्मिलित करने के बजाय, सरकारी व अर्ध सरकारी विद्यालयों के तुलनात्मक अध्ययन से और व्यापक निष्कर्ष प्राप्त किए जा सकते हैं।
- यह सुझाव दिया जाता है कि भविष्य के शोध में शिक्षकों की अभिवृत्ति एवं उनके शैक्षिक व्यवहार को भी छात्रों की उपलब्धि से जोड़कर देखा जाए, जिससे शिक्षक–छात्र संबंध की प्रभावशीलता पर रोशनी डाली जा सके।

संदर्भ सूची

1. अरोड़ा, रीता; मरवाहा, सुदेश (2005) *शिक्षण एवं अधिगम के मनोसामाजिक आधार,* शिक्षा प्रकाशन, जयपुर।
2. भार्गव, महेश (2010) *आधुनिक मनोवैज्ञानिक–परीक्षण एवं मापन,* एच.पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा।
3. भटनागर, सुरेश (1991) *शिक्षा मनोविज्ञान,* अटलान्टिक पब्लिशर्स, दिल्ली।
4. चौहान, एस.एस. (2007) *शैक्षिक मनोविज्ञान,* विकास पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
5. कपिल, एच. के. (2007) *अनुसंधान विधियाँ,* एच. पी. भार्गव बुक हाऊस, आगरा।
6. शुक्ला, प्रकाश (2012) *शैक्षिक मनोविज्ञान,* विनोद पुस्तक मन्दिर, मेरठ।

––==00==––